Introduction

प्राक्कथन

प्रारंभ से संसार के प्रत्येक देश में साहित्यकार का एक विशिष्ट स्थान रहा है। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में साहित्यकार का योगदान भी विशेष महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यही कारण है कि साहित्यकार को युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा भी कहा गया है। भावुक और संवेदनशील होने के कारण साहित्यकार तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक विषमताओं से विशेष रूप से प्रभावित होता है और तज्जन्य अनुभूतियों को गद्य या काव्य के रूप में वाणी प्रदान करता है।

आधुनिक कवि सियारामशरणजी की काव्य साधना भी अपने युग से विशेषरूप से प्रभावित रही है। उनकी काव्यकृतियों में जहाँ युगीन परिस्थितियों का यथार्थ अंकन हुआ है, वहीं युग को प्रभावित करनेवाली गांधी विचारधारा का प्रभाव भी दृष्टिगत होता है। वैष्णव परिवार में पालित पोषित होने के कारण तथा आस्तिक संस्कारों से संपन्न होने के कारण उनमें 'पराईपीर' की भावना अत्यंत बलवती रही है। इसी भावना के कारण वे गांधीदर्शन के अत्यधिक निकट आ सके हैं। जिस समय सियाराम-शरणजी काव्य सृजन की दिशा में सक्रिय हुए उस समय भारतीय जनता की दशा अत्यंत दयनीय थी। उन्हें राजनीतिक अत्याचारों एवं सामाजिक उपेक्षाओं को सहना पड़ रहा था। विदेशी शासकों के प्रभाव के कारण राष्ट्र की गौरवमयी संस्कृति के नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा था। मानव हिंसा के वात्याचक्र में उलझकर निरंतर पतनोन्मुख हो रहा था। हिंसा की विनाश लीला तथा मानवीय पाशविकता को देखकर मानवता के पुजारी गुप्तजी को अत्यधिक वेदना होती थी। वे मानवता की उपेक्षा को सहन नहीं कर सके। अतएव उन्होंने भारतीय संस्कृति के शाश्वत मूल्यों-सत्य और अहिंसा के महत्त्व को अपनी कविता के माध्यम से अभिव्यक्त कर एक ओर जहाँ संस्कृति की बुझती हुई लौ को पुनः प्रज्वलित करने का प्रयास किया, वहीं दूसरी ओर युद्ध संत्रस्त संसार को सत्य, अहिंसा का अमर संदेश देकर भयमुक्त बनाया। जिस समय द्विवेदीयुगीन कवि उग्र राष्ट्रीय

चेतना से ओतप्रोत उत्तेजनात्मक काव्य की सृष्टि कर रहे थे उस समय सियारामशरणजी ही एकमात्र ऐसे कवि थे जिन्होंने सात्त्विक भाव संपन्न काव्य का सृजन किया। इस दृष्टि से वे अपने युग के विशिष्ट कवि हैं। उनके काव्य में सर्वत्र सत्य, अहिंसा, प्रेम, वेदना, करुणा, उत्सर्ग आदि सात्त्विक गुणों का ही परिपाक हुआ है। वे सर्वत्र मानव समाज के उत्थान का प्रयत्न करते हुए दृष्टिगत होते हैं। उन्होंने अपने काव्य मणि रत्नों द्वारा आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य की अमूल्य निधि को समृद्ध करने में अपना योगदान दिया है।

उनकी काव्यकृतियों में गांधीदर्शन के प्राय: सभी प्रमुख पक्षों का आकलन दृष्टिगत होता है। उनके काव्य का मूल आदर्श सर्वजनहित की भावना है। उन्होंने प्राचीन एवं नवीन, पौराणिक और सामयिक, ऐतिहासिक तथा काल्पनिक आदि विविध विषयों को लेकर काव्य के कलेवर को संजोया है। यद्यपि हिन्दू धर्म और संस्कृति के प्रति उनके मनमें अनन्य प्रेम है, किंतु अन्य संस्कृतियों एवं धर्मों के प्रति उनका उदार दृष्टिकोण उनकी मानवतावादी दृष्टि का ही परिचायक है।

सन् १९१२ से लेकर १९६३ तक की सुदीर्घ कालावधि में उनकी अनेक मौलिक एवं अनूदित रचनाएँ प्रकाशित हुई है। उन्होंने खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य तथा गीतिनाट्य लिखने के साथ ही साथ नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई है। इस प्रकार सियारामशरणजी एक महान कवि हैं। किंतु उनके संबंध में अपेक्षाकृत अल्प परिमाण में शोध साहित्य प्रकाशित हुआ है। वैसे हिन्दी साहित्य पर गांधीवाद के प्रभाव तथा सियारामशरणजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर कुछ शोधकार्य अवश्य संपन्न हुए हैं, किंतु गांधीदर्शन के प्रभाव पक्ष को लेकर गुप्तजी के काव्य पर स्वतंत्र रूप से अध्ययन संभवत: अभी तक नहीं किया गया। अतएव इस शोध प्रबंध के माध्यम से इस अभाव की पूर्ति की दिशा में किंचित प्रयास किया गया है।

शोध प्रबंध का अपना एक विशेष क्षेत्र एवं परिधि होती है। इस दृष्टि से इस शोध प्रबंध में गांधीदर्शन के परिप्रेक्ष्य में सियारामशरण गुप्त की काव्यकृतियों का अनुशीलन किया गया है। यह शोध प्रबंध नौ अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय में सियारामशरणजी के जीवन का सामान्य परिचय दिया गया है। इसमें सियारामशरणजी के जन्म, वंश परिचय, बाल्यकाल, शिक्षा और अध्ययन, पारिवारिक जीवन, साहित्य सृजन की प्रेरणा, उपलब्धि और प्रसिद्धि, व्यक्तित्व, वेशभूषा, स्वभाव, खानपान एवं अभिरुचि आदि मुद्दों पर विचार किया गया है।

द्वितीय अध्याय में सियारामशरणजी की मौलिक एवं अनूदित काव्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में गांधीदर्शन के सैध्दांतिक पक्ष का विवेचन किया गया है। प्रारंभ में गांधीयुग की पूर्वपीठिका के रूप में भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना, गांधीयुग का पूर्वाभास तथा गांधीयुग के आर्विभाव की ओर संकेत किया गया है। इसमें राजनीतिक परिप्रेक्ष्य तथा सांस्कृतिक उन्नयन की भूमिकाओं को स्पष्ट करते हुए महात्मा गांधी के भारतीय राजनीति में प्रवेश और उनके द्वारा आयोजित विभिन्न आंदोलनों एवं सत्याग्रहों की पृष्ठभूमि में गांधी विचारधारा के प्रादुर्भाव और विकास की ओर संकेत किया गया है। तत्पश्चात् गांधी विचारधारा के विभिन्न पक्षों आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक राष्ट्रीय, आर्थिक, कला साहित्य तथा संस्कृति का सैध्दांतिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। आध्यात्मिक पक्ष के अंतर्गत सत्य एवं अहिंसा के स्वरूप एवं महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। अहिंसा प्राप्ति के निमित्त उन्होंने आत्मशुध्दि पर जोर दिया है। धार्मिक पक्ष के अंतर्गत गांधी धर्म अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। गांधीजी द्वारा निर्धारित आराधना प्रणाली में अस्तेय अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अस्वाद आदि व्रतों के पालन के साथ ही साथ उपवास एवं प्रार्थना को भी स्थान दिया गया है। सामाजिक पक्ष के अंतर्गत वर्णाश्रम धर्म, आश्रम

व्यवस्था, अस्पृश्यता निवारण, साम्प्रदायिक एकता, नारी उध्दार, वेश्या उध्दार, परदा प्रथा, विधवा विवाह, अंतरजातीय विवाह, शराब बंदी आदि समस्याओं पर उनके विचार प्रस्तुत किये गये हैं। आर्थिक पक्ष के अंतर्गत गांधीजी के अर्थ संबंधी दृष्टिकोण को ही प्रकट किया गया है। राजनीतिक-राष्ट्रीय पक्ष के अंतर्गत सत्याग्रह की व्याख्या, सत्याग्रह का उद्देश्य, सत्याग्रह का औचित्य, अहिंसक आंदोलन के लाभ, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा, स्वतंत्रता संग्राम, स्वराज्य, राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीयता आदि विषयों पर गांधीजी के विचारों को अभिव्यक्त किया गया है। अंतिम पक्ष कला, साहित्य, संस्कृति से संबध्द है। इसमें कला, साहित्य एवं संस्कृति संबंधी गांधीजी के विचारों पर दृष्टिपात किया गया है साथ ही उनके शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण तथा राष्ट्रभाषा के संबंध में उनके विचारों का भी विश्लेषण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में गांधीदर्शन के अध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में सियाराम-शरणजी की काव्यकृतियों का अनुशीलन किया गया है। इसमें प्रमुख रूप से सियारामशरणजी की कृतियों में अभिव्यक्त सत्य, अहिंसा एवं आत्मशुध्दि के स्वरूप को ही उद्घाटित करने का प्रयत्न किया गया है। गांधीवाद से प्रभावित होने के कारण सियारामशरणजी का भी सत्य प्राप्ति की ओर विशेष लक्ष्य रहा है। वे सर्वत्र अपनी कविताओं में सत्य या किसी ठोस लक्ष्य को ढूंढते हुए दृष्टिगत होते हैं। उन्होंने ईश्वर की अदृश्य सत्ता के प्रति कौतूहल एवं जिज्ञासा भाव को व्यक्त कर रहस्यभावना का परिचय दिया है। 'दूर्वा-दल' की 'विश्वास,' 'माली के प्रति,' 'घट,' 'कब,' 'पथ' आदि कृतियों में इन्हीं भावों का प्राधान्य है। 'मंजुघोष' और 'लाभालाभ' कविताओं में ईश्वर की अदृश्य सत्ता की ओर संकेत है तो 'नाम की प्यास' और 'अमृत' कविता में सत्य को पकड़ का आग्रह प्रकट हुआ है। 'उन्मुक्त' में भी अध्दैत भावना का समर्थन किया गया है। सत्य के समान उनकी कविताओं में अहिंसा का भी प्रबल समर्थन मिलता है। 'आर्द्रा' की 'डाकू', 'अग्नि परीक्षा' आदि कविताओं में हृदय परिवर्तन का ही प्रतिपादन किया गया है।

'आत्मोत्सर्ग' में भी हिंसा के स्थान पर प्रेम तथा एकता का संदेश तथा सर्वहित का प्रतिपादन मिलता है। 'बापू' में प्रेम, आशा और विश्वास के सहारे ही समस्त समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयत्न है। गुप्तजी का मानना है कि वैर को आग को मैत्री, क्षमा और प्रेम के द्वारा ही शांत किया जा सकता है। अत: 'नोआखली में' संकलित 'बिहार के प्रति' कविता में वैर को त्याग कर प्रेम एवं अहिंसा को अपनाने का आग्रह ही प्रकट हुआ है। 'जयहिन्द,' 'अमृतपुत्र' तथा 'गोपिका' में भी अहिंसा के प्रति उनकी आस्था प्रकट हुई है। इस प्रकार उनका समस्त काव्य अहिंसा और प्रेम की भावना से ओतप्रोत है। आंतरिक शुध्दि का भाव 'कामना,' 'परस्पर' आदि कविताओं में व्यक्त हुआ है।

पंचम अध्याय में गांधी दर्शन के धार्मिक परिप्रेक्ष्य में सियाराम-शरणजी की काव्य कृतियों का अनुशीलन किया गया है। इसमें गुप्तजी के धार्मिक दृष्टिकोण, नैतिक आग्रह, भक्तिभावना, रामनाम की महिमा, प्रार्थना की उपादेयता, कर्म के प्रति आग्रह, सेवा और परोपकार, तप एवं वैराग्य, व्रत एवं उपवास, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अस्वाद, अभय, शरीरश्रम तथा स्वावलंबन आदि मुद्दों पर विचार किया गया है। धर्म संबंधी उनके विचार 'आर्द्रा' 'आत्मोत्सर्ग,' 'नकुल,' 'नोआखली में,' 'अमृतपुत्र,' 'हमारी प्रार्थना' आदि कृतियों में प्रधान रूप से व्यक्त हुए हैं। आत्मानुभूति के निमित्त वे नैतिक अनुशासन का होना अनिवार्य मानते हैं। 'मौर्य-विजय,' 'आत्मोत्सर्ग,' 'मृण्मयी,' 'नकुल,' 'नोआखली में' इत्यादि कविताओं में कविने नीति की ही व्यंजना की है। 'उन्मुक्त' में हेमा के प्रति किये गये अशिष्ट व्यवहार के प्रसंग में नैतिकता के अभाव में मानवता के पतन की भर्त्सना की गई है। 'दूर्वादल,' 'विषाद,' 'पाथेय,' 'दैनिकी,' आदि रचनाओं में उनकी भक्ति का स्वरूप ही उद्घाटित हुआ है। 'मृण्मयी' को 'मंजुघोष' एवं 'दूर्वादल' को 'समीर के प्रति,' 'मूर्ति' आदि कविताओं में तप एवं वैराग्य का महत्व दर्शाया गया है। व्रत उपवास के अतिरिक्त आत्मशुध्दि के निमित्त ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अस्वाद और अभय के पालन को भी आवश्यकता है। इन

व्रतों के प्रति आग्रह सियारामशरणजी की कृतियों में भी व्यक्त हुआ है। 'अनाथ,' 'आर्द्रा,' 'आत्मोत्सर्ग,' 'मृण्मयी,' 'बापू,' 'नकुल,' 'उन्मुक्त,' 'गोपिका' आदि कृतियों में अपरिग्रह सिध्दांत का निरूपण किया गया है। उनकी कुछ रचनाओं में स्वावलंबन तथा परिश्रम से अर्जित किये गये अर्थ का महत्त्व भी प्रकट हुआ है। इस प्रकार सियारामशरणजी की कृतियों में गांधीजी के धार्मिक सिध्दांतों का सांगोपांग विवेचन हुआ है।

छठे अध्याय में गांधीदर्शन के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सियाराम-शरणजी की कृतियों का अनुशीलन किया गया है। इसमें प्रधान रूप से अस्पृश्यता निवारण, साम्प्रदायिक एकता, नारी समस्या, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, मद्यपान निषेध तथा शोषण आदि सामाजिक बुराइयों पर दृष्टि निक्षेप किया गया है। गुप्तजी ऊँचनीच की भावना एवं सामाजिक विषमता के प्रबल विरोधी है। 'अनाथ', 'आर्द्रा', 'नकुल', 'अमृतपुत्र' आदि रचनाओं में इस भावना का डटकर विरोध किया गया है। 'एक फूल की चाह' तथा 'अमृतपुत्र' में अछूतों के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार अपनाने का आग्रह प्रकट हुआ है। 'आत्मोत्सर्ग' एवं 'मौआरवली' में शोषक कविताएँ साम्प्रदायिकता की समस्या से संबध्द है। 'खादी कोवादर' में विधवा समस्या पर विचार किया गया है तो 'नूपुर' कविता में दहेज की कुप्रथा से पीड़ित कन्याओं की दुर्गति पर व्यंग्य किया गया है। 'अनाथ,' 'आर्द्रा,' 'दैनिकी' आदि कृतियों में शोषण, अन्याय, अत्याचार जैसी सामाजिक कुरीतियों और मनुष्य की असामाजिक भावनाओं पर व्यंग्य किये हैं। वस्तुत: सियारामशरणजी संवेदनशील कवि रहे हैं। उनकी अधिकांश रचनाओं में उनका मानवतावादी दृष्टिकोण अभिव्यक्त हुआ है।

सप्तम अध्याय के अंतर्गत गांधीदर्शन के राजनीतिक-राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सियारामशरणजी की काव्यकृतियों का अनुशीलन किया गया है। गांधीजी के समान गुप्तजी भी नीतिपूर्ण राजनीति के ही आग्रही रहे हैं। 'अनाथ,' 'आत्मोत्सर्ग,' 'बापू,' 'उन्मुक्त,' 'अमृतपुत्र,' 'जयहिन्द,' 'गोपिका'

आदि कृतियों में उन्होंने तत्कालीन अराजकतापूर्ण राजनीति पर कटु प्रहार किया है और सर्वत्र अहिंसा की महिमा का गुणगान करते हुए प्रेम एवं नीति का मार्ग अपनाने का आग्रह प्रकट किया है। राष्ट्रीय चेतना का मुखर स्वर भी इनकी कविताओं में ध्वनित है। गांधीजी के समान सियारामशरणजी ने सत्याग्रह के लिये नैतिक शक्ति के महत्व को भी प्रतिष्ठित किया है तथा सत्याग्रही के निर्भय रूप को झांकी एवं समर्पण भावना का भी निरूपण किया है। 'मौर्य-विजय,' 'आर्द्रा,' 'आत्मोत्सर्ग,' 'बापू,' 'उन्मुक्त' आदि कृतियों में सत्याग्रही के निर्भय रूप का चित्रांकन किया गया है। 'जयहिन्द' में जनतंत्रात्मक नीति का भी समर्थन मिलता है। इस प्रकार सियारामशरणजी के काव्य में राजनीतिक-राष्ट्रीय विचारों का भी पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगत होता है।

अष्टम अध्याय को दो भागों में विभक्त किया गया है -

[अ] आर्थिक पक्ष

[आ] कला साहित्य एवं संस्कृति पक्ष

प्रथम भाग में गांधीदर्शन के आर्थिक परिप्रेक्ष्य में सियारामशरणजी की काव्यकृतियों का अनुशीलन किया गया है। द्वितीय भाग के अंतर्गत कला, साहित्य एवं संस्कृति संबंधी गांधीजी के विचारों के परिप्रेक्ष्य में सियारामशरणजी की कृतियों का समुचित मूल्यांकन किया गया है।

[अ] आर्थिक पक्ष :

गुप्तजी की काव्यकृतियों पर गांधीजी के आर्थिक विचारों का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। उन्होंने समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता की ओर दृष्टिपात किया है। 'अनाथ' में गुप्तजी ने आर्थिक विषमता का हृदयग्राही चित्र अंकित किया है और अपने देशवासियों से अहिंसक क्रांति द्वारा क्रमशः इसी विषमता का अंत करने की प्रार्थना की है। 'दैनिकी' में भी सर्वहारा वर्ग के प्रति गुप्तजी की मानवीय संवेदना प्रकट हुई है। समाजमें

आर्थिक विषमता का अंत करने के लिये तथा दरिद्रों की दशा सुधारने के लिये धनिकों का स्वेच्छा से त्याग करना अपेक्षित है। 'चोर' तथा 'अब न करूँगी खेता' कविता में गुप्तजी ने मालिक का नौकर के प्रति करुणाभाव दिखाकर मालिक के हृदय परिवर्तन एवं पश्चाताप की ओर संकेत किया है। 'नकुल' में गुप्तजी ने शांति स्थापना के निमित्त धनिकों का स्वेच्छा से स्वार्थत्याग करने का आग्रह रखा है। आर्थिक अभ्युदय एवं अर्थविकास के लिये चरखा एवं खादी का विशेष महत्त्व है। गुप्तजी ने भी सूत कताई के व्दारा धन प्राप्ति के आदर्श को 'खादी की चादर' कविता में प्रकट किया है। 'दैनिकी' की 'यंत्रमुरे,' 'विकलांग,' 'शरीर साधन' आदि कविताओं में वैज्ञानिक प्रगति के कारण होनेवाले विनाश का चित्र अंकित है। इस प्रकार सियारामशरणजी की कृतियों में गांधीजी के आर्थिक विचारों का प्रबल समर्थन किया गया है।

[आ] कला साहित्य तथा संस्कृति पक्ष :

सियारामशरणजी की कला लोकमांगलिक तत्वों से समन्वित है। उनके काव्य में कोरी भावानुभूति नहीं है। उन्होंने मानव जीवन का परिष्कार करनेवाली सात्त्विक वृत्तियों का अंकन ही प्रधान रूप से किया है। कला के समान काव्य में भी उन्होंने उपयोगिता तत्व को ही महत्त्व प्रदान किया है। 'मौर्य-विजय,' 'दूर्वादल,' 'नकुल' एवं 'अमृतपुत्र' में भारतीय संस्कृति के प्रति श्रध्दाभाव प्रकट हुआ है। कवि की दृष्टि में विदेशी भाषा की अपेक्षा आत्मबल से सशक्त मातृभाषा का विशेष महत्त्व है। 'जयहिन्द' में उन्होंने विदेशी भाषा की अपेक्षा मातृभाषा के महत्त्व को दर्शाकर गांधीजी के विचारों का ही समर्थन किया है। इस प्रकार गुप्तजी की कृतियों में गांधीदर्शन के प्राय: सभी प्रमुख पक्षों का विवेचन हुआ है।

नवम अध्याय उपसंहार से संबध्द है। उपसंहार में विवेच्य धारा से प्रभावित गुप्तजी के काव्य पर विचार करते हुए संपूर्ण अध्ययन के फलस्वरूप उपलब्ध निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है। संक्षेप में, गांधीदर्शन के परिप्रेक्ष्य में गुप्तजी के काव्य का अनुशीलन करना ही हमारे इस शोध प्रबंध का लक्ष्य और उद्देश्य रहा है।

इस शोध प्रबंध को लिखते समय मैंने जिन जिन विव्दानों को बहुमूल्य पुस्तकों से लाभ उठाया है, उन सब के प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। मैं भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मदन गोपालजी गुप्त के प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे इस महत् कार्य को करने की प्रेरणा दी। मैं वर्तमान हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. दयाशंकरजी शुक्ल के प्रति भी अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। अंत में मैं आदरणीया डॉ. प्रेमलताजी बाफना रीडर, हिन्दी विभाग के प्रति भी पूर्णतया कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपने निर्देशन में इस शोध कार्य को संपन्न करवाया। समय समय पर मुझे उनसे जो प्रोत्साहन, आत्मीयता एवं स्नेह प्राप्त हुआ है, उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। उनकी महती कृपा एवं अमूल्य सहयोग के बिना इस महत् कार्य को समाप्त करना मेरे लिये किसी भी प्रकार संभव नहीं था। अंत में मैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा के प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ जिसने मुझे यह कार्य करने के लिये छात्रवृत्ति प्रदान की।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को मैंने यथासंभव प्रामाणिक तथ्यों के आधारपर परिपूर्णता प्रदान करने की कोशिश की है। फिर भी यदि इसमें त्रुटियाँ रह गई हों तो विद्वज्जन इसे मेरे अज्ञान का ही परिणाम मानें। अस्तु।

शशिकला झालानी
शशिकला झालानी